बुन्देलखण्ड में जल संरक्षण एवं प्रबंधन की परम्परा

याचना राणा[1] एवं राकेश राणा[2]

[1]महिला विश्व फाउंडेशन, नई दिल्ली– 110049, [2]एम.एम.एच.कालेज, गाजियाबाद, उ.प्र.

सारांश

पानी एक परम्परा है उन समृद्ध परम्पराओं की मेधा पर भरोसा करते हुये हमे यह देखना होगा कि **भारतीय समाज में जल और पेयजल के प्रबंधन के लिए क्या–क्या उपाय होते रहे हैं? जल संरक्षण और प्रबंधन परम्परा के वाहक क्या हैं?** बुन्देलखण्ड में तो स्थान नामों की पूरी परम्परा ही जल संरक्षण परम्परा की द्योतक है। बुन्देलखण्ड के ग्रामीण इलाके तो एक समृद्ध जल संरक्षण परम्परा के वाहक हैं ही, बाँदा शहर भी जल संरक्षण और प्रबंधन की अनूठी मिसाल है। पूरे शहर में स्थान नामों के लगे बोर्ड पानी परम्परा के प्रमाण है। शहर की कालोनियों के नाम है; **कालू कुआँ, शुकुल कुआँ, लोधी कुआँ, किरण कुआँ, नवाब टैंक** इत्यादि। इसी तरह बुन्देलखण्ड के महोबा **में मदन सागर और उदल सागर** उस कड़ी की समृद्ध परम्परा है। बरसाती पानी का संचय कर उसके वितरण की जो व्यवस्था बुन्देलखण्ड में पन्ना रियासत के राजाओं ने ढाई सौ वर्ष पूर्व की थी वह आज भी कायम है। पन्ना शहर पानी के मामले मे सदियों से आत्मनिर्भर है। महाराजा छत्रसाल के समय से लेकर महाराजा रूद्रप्रतापसिंह के शासनकाल तक तालाबों की एक पूरी श्रृंखला का निर्माण वहाँ कराया गया जो सैकडों साल बाद भी पन्ना शहर के जीवन का आधार बने हुये हैं। पन्ना शहर के आस–पास **मौजूद डेढ दर्जन से भी अधिक तालाबों में धरमसागर तालाब** उसी परम्परा का प्रतीक है। उँची पहाडी की तराई में इस विशाल तालाब का पानी भूमिगत जल सुरंगों के जरिये शहर के सभी प्राचीन कुओं मे पहुँचता है परिणामतः पन्ना शहर के अधिकांश कुऐं और तालाब लबालब भरे रहते हैं। **समाज कैसे अपनी पानी परम्पराओं का विकास और संरक्षण करता है? कैसे उनके इर्द–गिर्द अपनी भाषा और जीवन शैली को गढ़ता है? और जल को जीवन बनाता है।** इस शोध–पत्र में सामाजिक महत्त्व के इन्हीं सवालों को चिंतन के केन्द्र में रखा गया है।

Absract

Even Rahim had told us about the importance of the conservation of water, so the common man has been able to understand it's importance since a very long time. Nowadays the science and the technology have done a great progress but on the other hand we have forgotten the importance of water. Our ancestors had many methods that helped in the conservation of water and ensuring it's existence. What were the methods innovated by the Indian society regarding the availability of water and also drinking water? What are the methods of water conservation?

Society has always kept the sources of drinking water, water for irrigation and water for bathing etc. separately. Other sources for various uses also conserve the water for drinking in the end. for instance ponds, wells, bawris etc. Many places in Bundelkhand are named after the main water conservation sources like ponds, lakes wells etc. Important colonies are also named after such sources for instance Kaalukua, Shukulkua, Lodhikua etc.

Many places in Bundelkhand are named after water conservation sources likeponds,lakes, wells etc. colonies in Banda are also named after thuse sources namely kalukua, lodhikuaetc. similarly in Mahoba of BundelkhandMadan sager &Udalsagar are also named on those sources. 250yrs ago rain water harvesting and its distribution of Panna estate of Bundelkhandhas been an exampls for us all. A small city like Panna is self dependent on the basis of drinking water. of ponds had been set up since the time of the rule of Rudrapratapsingh in

Bundelkhand that are still the backbone of people having there Dharamsagar is one of the 1.5 dozen lakes ,ponds near Panna city . These 1.5 ponds, lakes are very for the people of Panna in order to make life easy . From these ponds the water had been sent to all the ancient wells all around the location so even in extremely hot days most of the wells of Panna were filled with water&so methods of water conservation in Bundelkhand have been discussed & also how does the society setteles around the water recourse & conserves water resources for further usage ? The importances of water in our life has also been discussed . In the following research paper these questions have been focused & answered as wel

बुन्देलखण्ड़ में चेदियों के बाद वीतिहोत्रों से होते हुए मौर्य एवं शुंगवंशों का राज्य रहा। वीतिहोत्र यादववंशी थे। कुषाण, मद्य राज्यों के बाद गुप्त साम्राज्य लंबे समय तक रहा। पाण्डु, कलचुरियों, गुर्जर–प्रतिहारियों के बाद चन्देलवंश कई सौ वर्ष रहा। महमूद गजनवी ने कालिंजर दुर्ग में दो बार हमला किया, पृथ्वीराज चौहान ने भी हमला किया था। गुलामवंशी सुल्तानों तथा मुगलों के हमले कालिंजर में होते रहे। आल्हा–ऊदल जैसे वीर नायक बारहवीं सदी में इसी क्षेत्र में थे। बुन्देल सरदार छत्रसाल यहाँ के सशक्त शासक रहे हैं। मराठों का भी अधिकार अंगरेजी साम्राज्य तक यहाँ रहा है। इतिहास की इन शक्तियों ने जल संरक्षण की विभिन्न पद्धतियों का विकास अपने–अपने ढंग और अपनी–अपनी समझ के हिसाब से किया। बुन्देलखण्ड़ की पानी परम्परा जिस निरन्तरता और उत्कृष्टता की वाहक है वह अपने आप में एक मिसाल है।

बुन्देलखण्ड के राजा–महाराजाओं ने पारंपरिक कुओं, बावडियों, जलाशयों के निर्माण को अपने जीवन में महत्व दिया। उन्होनें जल संरक्षण कर पानी को धरती के अंदर भेजकर भावी पीढ़ी के लिए रास्ता सुगम किया। एक समय था जब जल का खजाना लबालब था लोग कम थे और जल अधिक जल संकट का नामोनिशान न था। गाँवों में कुओं के महत्व को कोई नहीं नकार सकता। देखते ही देखते कुँओं का स्थान हैंडपंपों ने लिया और इनका स्थान नलों ने लिया। हमने सिर्फ प्राकृतिक जल संपदा का दोहन ही किया है। वर्षाजल का 90 से 95 प्रतिशत भाग बहकर नदियों के रास्ते समुद्र में पहुँच जाता है। पारम्परिक जलस्त्रोत कुऐं, बावडियाँ, तालाब, और चश्में सूख गए।

भारत में जल आपूर्ति और प्रबंधन आजादी के बाद सरकार के हाथों में रहा है। इससे गाँवों में जो जल संचय के सार्वजनिक प्रयास और तरीके थे, धीरे–धीरे खत्म होते गए। पानी का निजीकरण कर देने के बाद जल संचय संरक्षण और प्रबंधन के सार्वजनिक प्रयासों में और भी कमी आई। इससे पारम्परिक जल स्त्रोतों की हालत और भी खराब हो गई। सरकारों की लापरवाही तो रही ही है समाज की भूमिका को लेकर भी एक नहीं अनेकों सवाल हैं। समाज ने अपने जल संसाधनों के रखरखाव और उनकी रक्षा के लिए क्या किया ? नदियों, तालाबों, कुँओं को बचाए रखने के लिए क्या किया ? क्या हम अपनी जीवनदायनी नदियों को प्रदूषिण करने से बाज आए हैं ? हम पानी के उपयोग मे कितना नियंत्रण बरतते हैं, ? पानी को लेकर कहाँ तक सचेत हैं ? पानी की बरबादी रोकने के लिए घर और घर के बाहर हम कहा तक सतर्क रहते हैं ? दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह रही है कि परंपरा में पानी का जो प्रबन्ध था ऐसे भी जाने या अनजाने में छिन्न–भिन्न कर दिया। विकास के नये दौर मे पारंपरिक जल स्त्रोतों को जैसे अप्रासंगिक मान लिया गया। उनकी या तो पूरी तरह उपेक्षा की है या उनमें हस्तक्षेप किया गया है। पानी का व्यापार होने लगा है, जैसे पानी का भी किसी फैक्ट्री में भारी मात्रा मे उत्पादन हो रहा हो। इस प्रक्रिया ने मानव और पानी के सम्बन्ध को ही बदल दिया है। हमारे पूर्वजों की समझ साफ थी कि समस्या पानी की इतनी नहीं जितनी उसके संकलन की है। लोग पानी का पूरी तरह से संचयन कर उसका उपयोग करते थे। तालाब, झीलें, कुएँ, बावडियाँ, नाले, नालियां, टांके कुण्ड, ढाका, बेरियां, सतही जल संरक्षण, छोटे कच्चे बाँध भूजल प्रबन्ध पानी परम्परा के प्रमुख घटक थे। कुएं, बावडियां भूजल स्त्रोत थे बाकी बरसात के पानी को जगह–जगह संग्रह कर उससे सिंचाई का प्रबंध किया जाता था।

पानी केवल 7 प्रतिशत ही तरल रूप मे है, बाकी बर्फ के रूप में जमा है जो ध्रुवों पर और ऊँचे पर्वतों पर स्थित है। 0.7 प्रतिशत पीने के योग्य पानी में 0.6 प्रतिशत हमें भूजल के रूप मे उपलब्ध है, और बाकी 0.1 प्रतिशत नदियों–झीलों में और वाष्प के रूप मे हवा में। दुनिया भर में प्रतिवर्ष कुल 10 से 12 हजार एम.एच.एम पानी बरसता है। एक एम.एच.एम का अर्थ है–एक मिलियन अर्थात दस लाख हेक्टेयर भूमि पर एक मीटर गहराई जितना पानी। इसमें से भी 400 एम.एच.एम भारत मे बरसता है ओर 230 वाष्प बन जाता है। 110 एम.एच.एम सीधे नदियों मे बह जाता है। 60 एम.एच.एम सतह पर बह जाता है, यह पानी ही भूजल के स्तर को बढाता है। भारत में प्रति व्यक्ति 50 लीटर पानी का उपयोग प्रतिदिन करता है। इस हिसाब से लगभग डेढ एम.एच.एम पानी पर्याप्त है जबकि प्रकृति हमें 60 एम.एच.एम पानी देती है। (व्यास) अतः समस्या पानी की नहीं वरन् पानी के समुचित संचयन की है। पारंपरिक शैली में बारिश का पानी अधिकतम संग्रह कर लेने के व्यापक प्रयास हों तो जल संकट होगा ही नहीं। जल संरक्षण की जो व्यवस्था हमें परंपरा से प्राप्त थी उसे हमने छिन्न–भिन्न कर दिया।

पानीदार बुन्देलखण्ड़ क्षेत्र भी आज पानी विहीन है, केन एवं यमुना के 8–10 मील के किनारे, पठारी भागों में भूजल स्तर गहरा है। करोड़ों के खर्च के बाद भी पाठाक्षेत्र प्यासा है। गाँवों में पानी की किल्लत के कारण शादियाँ तक रूक जाती है। खारे एवं दुर्लभ पानी से रूकी शादियों वाले गांव के लोग नारायन से नरैना बनते रहते हैं। तुलसी ने ऐसे विन्ध्यवासी तपस्वियों पर व्यंग्य किया है। भँवरा/भौरा पाठाक्षेत्र का एक गाँव है, जिसकी औरतों के लिए एक घड़ा पानी पति से ज्यादा प्यारा है :

भौंरा तोर पानी गजब करि जाय। गघरी न फूटे खसम मरि जाय।।

बुन्देलखण्ड के लोक–विश्वासों में जल की महत्ता के अनेक प्रयोग परंपरा से स्पष्ट है कि लोग अपने सभी शुभ अवसरों पर जल का पूजन करते हैं। ऐसे अवसरों पर जल केद्रों की अभ्यर्थना का भी विधान है नदी सरोवर कुआँ बावडी का पूजन करके ही उनका जल पवित्र कार्यों के लिए आहरित किया जाता है। साहित्य, शिल्प और शौर्य बुन्देनी लोक संस्कृति की रग–रग में बसा है। बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति में धर्म और कला को विशेष महत्व मिला है। धर्म के साथ कला का सुन्दर सामंजस्य बुन्देली भू–भाग की उन विशेषताओं को व्यक्त करता है, जो सामाजिक जीवन, कला के विभिन्न रूपों और दर्शन की सहज अभिव्यक्ति का परिचय देती है। बुन्देलखण्ड के लोक साहित्य में बुन्देली समाज के जीवन से लेकर विशेष अवसरों तक के व्यवहारों, कलात्मक रूचियों, नीति, व्यवहार, मर्यादा, प्रकृति प्रेम, पानी परम्परा के तत्व, रूढ़ियों अभिचारों की यथेष्ट विवृत्ति मिलती है। बुन्देलखण्ड़ वासियों में भाग्यवाद प्रबल रुप से सदैव से ही नजर आता है। शताब्दियों से प्रवहमान बुन्देली संस्कृति में अब भी धर्म निष्ठा, कला प्रियता, संयम, शौर्य, और संकल्प शक्ति अद्वितीय रुप से दिखती है।

बुन्देली समाज और संस्कृति में वैयक्तिक एवं सामाजिक स्तर पानी परम्परा के अनेक प्रमाण मिलते हैं, जैसे कला में व्यक्तिगत रूप में गोदना, महावर, मेंहदी अनुष्ठानों में दिखती है। उसी तरह सामाजिक रूप में वह विभिन्न संस्कारों में बनी अल्पनाओं, त्यौहारों में बनी मूर्तियों और साज–सज्जा में मिलती है। संगीत प्रेमी बुन्देलीजन विभिन्न त्यौहारों और ऋतुओं के पर्वो में नृत्य करके मन को आल्हादित करते है। भक्तिपूर्ण अवसरों पर गीतों से देवों की अर्चना करते है पूरा क्षेत्र राममय है। तुलसी यहाँ घट–घट में बसता है। गली नुक्कड़ चौराहे पर राम और हनुमान की मुर्तियाँ रखी दिख जायेगी। बच्चा–बच्चा गली–गली तुलसी की चौपाईयाँ गाता मिल जायेगा। तुलसी जैसे यहाँ लोकमानस में गहरे तक रचा–बसा उनका अपना है। ठीक उसी तरह जैसे राजस्थान के विश्नोई समाज के भू–भाग में कृष्ण मृगों एवं चिंकारों ने विश्नोइयों से निकटता विकसित कर ली है। लोग घायल हिरनों की मलहम पट्टी भी कर देते है। यह आत्मीय व्यवहार अन्तर्ज्ञान के रूप में तीन सौ वर्षो में विकसित होकर वंशानुगत हो गया है, यानी गुणसूत्रों (जीन्स) आ गया है। इसी तरह बुन्देलखण्ड में पानी परम्परा पुष्पित और पल्लवित हुई है। पानी संरक्षण की पद्धतियों का जो एक लम्बा इतिहास है, और उसकी अपनी एक पूरी ऐतिहासिकता और सामाजिकता है। वह उस परम्परा की निरन्तरता की एक तस्वीर प्रस्तुत करती है। गोरिहार के राजाओं द्वारा बनवाया गया कंधरदास तालाब, चंदेलों द्वारा बनवाये गये बुन्देलखण्ड के अनेक तालाब, प्रागी तालाब, छाबी तालाब, डिग्गी तालाब, बॉदा के नवाबों द्वारा बनवायें गयें विभिन्न तालाब, नवाब टैंक, कच्चा तालाब, साहब तालाब, बाबा तालाब, पल्हरी का तालाब आदि। इसी तरह बुन्देलखण्ड के महोबा में कीरत सागर, मदनसागर, विजयसागर, सलारपुर रिजखोयर, बेलाताल है। इतना ही नहीं बुन्देलखण्ड में तो स्थान नामों की पूरी परम्परा ही जल संरक्षण परम्परा की द्योतक है। बुन्देलखण्ड के ग्रामीण इलाके तो एक समृद्ध जल संरक्षण परम्परा के वाहक है ही, बॉदा शहर भी जल संरक्षण और प्रबंधन की अनूठी मिसाल है। पूरे शहर में स्थान नामों के लगे बोर्ड पानी परम्परा के प्रमाण है। शहर की कालोनियों के नाम है; कालू कुआँ, शुकुल कुआँ, लोधी कुआँ, किरण कुआँ, फूटा कुआ, करहैया, गुरहा कुआँ आदि। अपनी पानी परम्पराओं का विकास और संरक्षण अपनी भाषा और जीवन शैली के ईर्द–गिर्द करता बुन्देली समाज जल को जीवन बनाता है, उसे समाज में जीवित सत्ता की तरह स्थापित करता इन्हीं परम्पराओं के पहियों पर उस निरन्तरता कों सदियों से बनायें हुए है। कुऐं, तालाब, नदियाँ बुन्देली समाज के लिए जल स्रोत भर नहीं बल्कि वह हर क्षण इन्हें एक जीवित सत्ता की तरह देखता है, बनाता है, गढ़ता है। हर पोखर, तालाब, तलैया, कुआँ पूरी सामाजिकता के साथ अवतरित है। हर जलधारा ऐतिहासिकता, धार्मिकता, सामाजिकता और समग्रता के साथ यहाँ की भाषा में व्यवहार में सोच में गहराई तक समायी हुई है। बुन्देलखण्ड़ में साहित्य के जाने–माने हस्ताक्षर कवि केदारनाथ अग्रवाल बुन्देलखण्ड़ की केन नदी को पूरी श्रद्धा और आस्था के साथ अपनी कविताओं में जीवन भर गुनगुनाते रहे। जनमानस को बुन्देली परम्परा और स्थानीयता के प्रति सम्मान सिखाते रहे।

चिडिया जो–चोंच मारकर
चढ़ी नदी का दिल टटोल कर
जल का मोती ले जाती है।
वह छोटी गरबीली चिड़िया
नीले पंखो वाली मैं हूँ
मुझे नदी से बहुत प्यार है। ..... केदारनाथ अग्रवाल

इसी तरह

केन किनारे पलथी मारे..... **और** **आज नदी उदास थी.....**

जैसी ढ़ेरों कवितायें केदार ने बुन्देलखण्ड की केन नदी पर लिखी है **युग की गंगा** से लेकर **जमुनजल तुम** तक की कविताओं मे बुन्देली पानी परम्परा और जल स्रोतों के प्रति गहरा अनुराग केदार की कविताओ में भी परिलक्षित होता है।

बुन्देलखण्ड में जल स्रोतों के संरक्षण उनके संवर्द्धन और प्रबंधन की परम्परा के पीछे लोक व्यवहार और जनमानस की दैनंदिन गतिविधियों को साथ इस तरह से समाहित करने वाली जीवनशैली है जो जल और जन को जोड़े हुए है। रामदास पहलवान का अखाडा इसी परम्परा को बॉदा के नवाबों के बनायें नवाब टैंक में आज भी जीवंत किये हुए है। हर कुऐं और तालाब किनारे हनुमान मंदिर इनकी ऐतिहासिकता को समृद्ध करता है। महोबा के कीरत सागर किनारे सावन में लगने वाला कजली मेला समाज को समन्दर की तरह उमड़नें घुमड़ने का अवसर सदियों से देता चला आ रहा है। अखाड़ा, मन्दिर, मेला यह सब जल स्रोतों को जीवित सत्ता की तरह समाज के सम्मुख उपस्थित रखता है। सामाजिक परम्पराओं और अनुष्ठानों में लोक–संस्कारों में इन जल स्रोतों की समय के साथ–साथ सतत् उपस्थिति जल और जन को जोड़कर उसके संरक्षण और प्रबंधन की परम्परा को संस्थागत करती हैं।

बुन्देलखण्ड़ में जब प्रसूता प्रसूति कक्ष से पहली बार बाहर निकलकर घरेलू कार्यो की ओर प्रवृत्त होती है तब वह सबसे पहले कुऐं से जल भरने जाती है। गाती बजाती स्त्रियों का समूह कुऐं के घट पर पूजन करता है, प्रसूता स्त्री अपने स्तनों के दूध की कुछ बूंदे कुऐं में निचोडती है और कुऐं से जल भरती है और सिर पर जल से परिपूर्ण कलश लेकर घर लौटती है। इस यात्रा में लोक गीतों में जल की प्रार्थना की जाती है। बुंदेलखंड में एक लोकगीत गाया जाता है कि पनहारिन पानी भरने के लिए निकलती है रास्ते में एक अडियल सर्प उसको रोक रहा है। वह पनहारिन के शरीर से लिपटना चाहता है।

पनहारिन की गैल मे जो पडे अरंगी सांप री–जे नैना तोरे वान दी।
काहे को जो लौट–पौटे काहे को मन्नाय जे नैना तोरे वान री ।।

इसी तरह शादी विवाह के अवसर पर पनहारिन जल–स्त्रोत का पूजन करती है। उसे विवाह में सम्मलित होने का आमंत्रण देती है फिर अपनी सात सहेलियों के साथ जल/मिट्टी भरकर वापस होती है। जल का उपयोग विवाह दौरान विभिन्न कार्यों मे प्रयोजनीय मृदभांडो के बनाने मे किया जाता है। इस तरह जल जोडने का काम करता है। जल समाहित्य का पोषक है हमारे अधिकांश मेले और धार्मिक आयोजन जल–केंद्रों के आस–पास ही आयोजित किये होते हैं। जल हमारे सांस्कृतिक समन्वय का आधार रहा है। विभिन्न नदियों और सरोवरों से कावडों में जल लेकर विभिन्न क्षेत्रों में स्थित शिवलिंगों पर यह जलाभिषेक किया जाता है। महाकवि तुलसीदास ने तो अपने रामचरितमानस मे उत्तर–दक्षिण को जोडने का आधार ही जल को माना है। तुलसी के श्री राम ने दक्षिण के समुद्र तट पर शिवलिंग की स्थापना करते हुए उद्घोषणा की कि जो हिमालय की गंगोत्री से गंगा–जल लेकर रामेश्वरम् के शिवलिंग पर अर्पण करेगा उसे मोक्ष प्राप्त होगा। तुलसी लिखते हैं कि:–

जे जलु आनि चढै है। ते सामुज्य मुक्ति नर लहि है।

इसी के आधार पर असंख्य जन गंगा जल को लेकर निरंतर इस देश की उत्तर से दक्षिण तक यात्रा करते रहते हैं।

बुन्देलखण्ड़ में ऐसे अनेक स्थान नाम है जो पानी परम्परा के प्रमाण हैं। (दुबे) वरतलाई जैसे अनेक नाम है जो तालाब पर केंद्रित है–नंगातलाई, जोरतला, भरतला, बेलाताल इत्यादि। बडें तालाब को सागर कहा जाता है। तालाब मनुष्य और प्रकृति के मिले–जूले संघर्ष का परिणाम है। सागर जिसे पौराणिक कथाओं के आधार पर सगर नाम के राजा के साठ

हजार पुत्रों ने खोदकर बनाया था। सगर महाराज के नाम से ही सागर नामकरण समुंद्र का हुआ। महाराज पृथु ने भी पृथ्वी पर अनेक तरह की जल–संरचनाओं की व्यवस्था की थी और इन्ही संरचनाओं से धरती को जल से सिंचित करके धनधान्य युक्त बनाया। महाराज पृथु के नाम से ही धरती का नाम पृथ्वी हुआ। पृथ्वी पर जीवन के साथ ही तालाब निर्माण का कार्य प्राथमिक और महत्वपूर्ण रहा होगा। प्राचीन काल से लेकर आज तक तालाबों के निर्माण का अधिकांश जिम्मा राज्य–व्यवस्थाओं के हाथों ही होता रहा है। तालाबों के भी नाम भी राजाओं द्वारा बनाये गये तालाब उनके नामों से ही विख्यात है। जबलपुर में आधारताल, रानीताल, चेरीताल जैसे तालाब अपने नामकरण में राजा रानी और दासी तक के साथ जुडे हुए हैं। देवताओं के नाम से भी तालाबों के नामकरण की परम्परा पुरे बुन्देलखण्ड़ में दिखती है। पन्ना मे किशोर सागर नाम का तालाब पन्ना के प्रसिद्ध देव किशोर जू के नाम पर है। बुन्देली गांवों मे प्राकृतिक संरचना तथा भू–भौतिक पहचानों के आधार पर नामकरण किये गये हैं यथाः नीमवाली तलैया, तिगेला ताल। बुन्देलखण्ड़ के शहरों में पेयजल का प्रबंध तालाबों से ही किया जाता रहा है। पन्ना शहर की संपूर्ण पेयजल व्यवस्था का आधार तालाब ही है।

बुन्देलखण्ड़ में तालाबों को जोडी से बनाने का भी विधान ऐसे तालाबों का विवाह धूमधाम से किया जाता है। खान–पान दान–दायजे की विधियँ भी संपन्न की जाती हैं। जल की अभिवृद्धि हेतु ही यह मंगल विधान संपन्न होता है। प्रकृति के भीतर भी मानवीय धर्म की तलाश का यह सामाजिक प्रयोजन हमारी **पानी–परंपरा** का ही द्योतक है। बुन्देली परंपरा का जिसमें जल को जीवित सत्ता की तरह माना गया है, उसी बुन्देलखण्ड़ में तुलसीदास ने रामचरितमानस मे लिखा हैः– **संगम करहिं तलाब–तलाई।** तुलसीदास तालाब रूपक मे तालाब के रखवालों की भी चर्चा करते हैं:**–तेई ऐहिताल चतुर रखवारे।** तालाबों की रक्षा–सुरक्षा का भाव हमारे भीतर होना चाहिए। यही तुलसी के समय से चली आयी पानी परम्परा जल स्रोतों को वंदनीय और जल को देवता बनाती है।

बुन्देलखण्ड़ में कुआँ ढ़ेरों स्थान नामों के साथ जुड़ा है। कालू कुआँ तो शहर की सबसे बड़ी बस्ती है। शब्द कभी–कभी अपने साथ बहुत लंबा इतिहास लेकर चलते है। कुआं एक ऐसी संरचना है जिसे शुष्क जल–स्त्रोतों की छाती पर बनाया जाता है। झिारिया और गड्ढ़ा कुआं के शुरुआती रूप है। पृथ्वी के गर्भ से पानी को प्राप्त करने का आदिम कृत्रिम स्त्रोत। मनुष्य की जल तकनीक संबधी विकास–यात्रा मे इन कृत्रिम जल–स्त्रोतों को ही आगे चल कर कुआं का रूप मिला । भू–गर्भीय जल को उपर लानें की पहली तकनीक संभवतः कुआं ही हो। कुआं का गढ्ढा उस निचाई तक खोदा जाता है जिस निचाई में पानी की झिरें आ जायें। कुआं लोक–आस्थाओं और लोक–विश्वासों का केन्द्र बना। कुआं लोक संस्कृति का संरक्षक जैसा है। विभिन्न अनुष्ठान उत्सव कुओं पर ही सम्पन्न होते है। कुआं एक तरह से लोक–तीर्थ है। गांवो मे कोई ऐसा कुआं हो, जिसके समीप देवालय न हो। कुआं या मंदिर या देव–चबूतरा और कुआं की जोडी सर्वत्र मिल जायेगी। बुन्देलखण्ड़ में तो हर कुएं और तालाब के पास अखाड़ा और हनुमान जी का मंदिर बना है। कुआं केवल एक जल स्त्रोत नहीं है वह सामाजिक जीवन का एक जीवंत हिस्सा है। कुआं लोक मानस मे अपनी उपस्थिति आज भी दर्ज कराये हुए है। बुन्देलखण्ड़ में इन कुओं का धार्मिक महत्व है। बुन्देलखण्ड़ के चित्रकुट में एक प्रसिद्ध कुआं है–**भरत कूप**। यह कुआं चित्रकूटधाम शिवरामपुर के पास स्थित है। चित्रकूट जाने वाले तीर्थ यात्रियों को इस कूप के दर्शन करना पुण्यलाभ कार्य माना जाता है। कहा जाता है कि अयोध्या में श्रीराम के राज–तिलक के लिये विभिन्न नदियों का जल एकत्रित किया गया और जब श्रीराम को राजा बनने के बजाय वनवासी बनना पडा तब यह जल भरत वहाँ लेकर गये जहां चित्रकूट मे श्रीराम वनवास काट रहे थे। शिवरामपुर के पास एक कुऐं मे यह जल समर्पित कर दिया गया। इस कुएं का जल पीने से, स्नान करने और जल के दर्शन करने से उन सभी पवित्र नदियों से भाव–रूप में जुड जाता है जिनका जल इस कुएं मे डाला गया है। ऐसा ही एक कुआं दक्षिण में रामेश्वर मंदिर में है। इसे **रामेश्वर–कूप** कहा जाता है। इसी तरह इस कुएं मे शिव अभिषेक के लिए बाईस पवित्र नदियों का जल उडेला गया है।

जल जीवन है और जल स्त्रोत जीवन के स्त्रोत है। नदी, तालाबों और कुओं का नाता समाज और मनुष्य से उतना ही पुराना है जितना धरती पर मानव जीवन का आविर्भाव। दुनियां की सभ्यतायें जल स्त्रोतों के इर्द–गिर्द ही विकसित हुई हैं। समाज अपनी भाषा और जीवन शैली को इन्ही के इर्द–गिर्द बुनता रहा है। व्यक्तियों, घटनाओं, जातियों, क्षेत्रों और महत्वपूर्ण स्थानों के नाम उनके आधार पर रखता रहा हैं। हिन्दु शब्द सिंधु नदी के नाम से ही व्युत्पन्न हुआ है। डा. रामविलास शर्मा अपनी प्रसिद्ध पुस्तक (1961) **'भाषा और समाज'** मे कहते हैं कि हर भाषा के बोलने वाले किसी सामाजिक रूप मे संगठित होते है, साथ ही पारस्परिक विनिमय की आवश्यकताओं से भाषायें विकसित होती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसकी भाषा सापेक्ष व्यापार (व्यवहार) है। डा. गोविन्द स्वरुपगुप्त अपनी पुस्तक **'भारतीय भाषाओं के अंतसंबंध** ' में लिखते है कि भाषा केवल प्रतीकों की व्यवस्था नही हैं बल्कि समाज सापेक्ष प्रतीक व्यवस्था है। किसी भी भाषा में सामाजिक तथ्यों का समावेश होता है भाषा मात्र व्याकरणिक संरचना से नहीं चलती है बल्कि सामाजिक संरचना से सम्पृक्त होती है।

इस दृष्टि से बुन्देलखण्ड में स्थान नामों पर दृष्टि डालने से स्पष्ट होता है कि बुन्देली समाज और संस्कृति में पानी परम्परा के पर्याप्त पुट मौजूद है। भाषाई दृष्टि से बृन्देली में ऐसे शब्दों का पर्याप्त भंडार है, जो इस पानी पद्धति को पुष्पित और पल्लवित करने वाले रहे हैं। बुन्देली लोक मानस को अद्वितीय ढंग से प्रभावित करने वाले तुलसी जी की रचना **रामचरित्रमानस** में पर्याप्त शब्द भंडार और संदेश पानी परम्परा के प्रतीकों को गढ़ने वाले हैं। भाषा से समाज के विभिन्न संबधों की स्थापना और निर्वाह होता है। भाषा और शब्दावली स्थान–नामों के संबंधो के आधार को पहचानने मे मदद करते हैं। **डा. रामप्रकाश गुप्त** का बाँदा–चित्रकुट के स्थान नामों का अध्ययन इस दिशा मे मील का पत्थर है। उन्होनें विस्तार से जल वर्ग के अंतर्गत उन सब नामों का उल्लेख अपने शोध मे किया है जो बुन्देलखण्ड मे पानी परंपरा के प्रतीक है अनेक क्षेत्रों के नाम, मोहल्लों के नाम, स्थानों के नाम जल स्त्रोतों से जुडे हैं। बॉदा का नरी और नरौला गांव, कर्वी का चक–झीलिंग और झील गॉव, मड का औझर और चौहंडा बबेरू का बहितिराताल, चित्रकुट के मानिकपुर क्षेत्र धारकुंड़ी और मारकुण्डी जैसे स्थान नाम उस बुन्देली पानी परंपरा के ही प्रतीक है जो ऐतिहासिक विरासत के साथ सदियों से बुनी गयी है।

बुन्देलखण्ड में जल संरक्षण और प्रबंधन की परंपरा प्राचीन है। पूरे बुन्देलखण्ड मे इसके चिन्ह विभिन्न रूपों मे जगह–जगह आज भी देखे जा सकते है। चरखारी के तालाब कितने वैज्ञानिक ढंग से अंतर्गुम्फित है, जिनके कारण सूखे और अकाल के दिनों में भी यह क्षेत्र सदानिरा रहता है और बुन्देलखण्ड़ का कश्मीर कहा जाने वाला चरखारी हरा–भरा रहता है। यह अध्ययन की रुचि को जगाने वाला है और गंभीर अनुसंधानों की माँग करता है तथा बुन्देलखण्ड़ की पानी परम्पराओं को समझने की ओर घोर जल संकट से जूझ रहे विश्व को प्रेरित करने वाला है।

संदर्भ

स्वरुपगुप्त, डा0 गोविन्दः 1975 भारतीय भाषाओ के अर्तसंबंध **पृ0 10**

शर्मा, डा0 रामविलास : 1969 भाषा और समाज **पृ0 18**

गुप्त, डा0 रामप्रकाश : 2010 बॉदा एवं चित्रकुट जनपदों के स्थान–नाम **पृ0 97**

दुबे, श्याम सुन्दरः 2011 लोक में जल प्रकाशन विभाग दिल्ली **पृ0 21**

राणा, डा0 राकेशः 2014 बिन्दास बुन्देलखण्डः बुन्देली समाज एवं संस्कृति **पृ0 41**

व्यास, मनोहरश्यामः 2006 बिन पानी सब सून कुरूखेत्र 2006 **पृ0 25**

दुबे, श्याम सुन्दरः 2006 लोक–संस्कारो में जल की भूमिका कुरूक्षेत्र **पृ0 27**

राणा, डा0 राकेशः 2015 जल चेतना **पृ0 27** आई. आई. टी रूडकी, हरिद्वार

नोटःआशुतोष तिवारी और डॉ.अशोक सिंह परिहार ने बुन्देलखण्ड़ के तालाबों पर पी.एच.डी. की है जिनका मुझे विशेश सहयोग मिला है।

ऐड. 6/2/16 ई, सेक्टर–6 फ्लेट नं. ए–1 वैशाली, गाजियाबाद–201012 (यू.पी.) फोन; 0120–4374669//9650912927